## 21 दिवसीय पाण्डुलिपि एवं लिपि विज्ञान प्रारम्भिक राष्ट्रीय कार्यशाला

## संयुक्त तत्त्वावधान

## बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली तथा राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

## ( दिनांक 11.09.2016 से 01.10.2016 )

# प्रतिवेदन

भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान एवं राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 21 दिवसीय पाण्डुलिपि एवं लिपि विज्ञान प्रारम्भिक राष्ट्रीय कार्यशाला (11 सितम्बर 2016 से 01 अक्तूबर, 2016) आयोजित हुई। इस कार्यशाला में प्रबुद्ध प्रतिभागियों को ब्राह्मी लिपि से आधुनिक लिपियों के विकास का इतिहास, जैन देवनागरी, शारदा लिपि, उड़िया लिपि एवं प्राचीन गौड़ी लिपि, पाण्डुलिपियों का स्वरूप, इतिहास और संरक्षण तथा उनके आलोचनात्मक संपादन की प्रविधि आदि का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के वित्तीय सहयोग से आयोजित इस राष्ट्रीय कार्यशाला में 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनका चयन अस्सी आवेदकों में से किया गया। इनमें सहायक प्रोफेसर, यू. जी. सी. पोस्ट डॉक्टरल फेलो, पी. एच.डी. एवं एम. फिल के प्रतिभागी सम्मिलित थे। ये केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, बी. एच. यू., वाराणसी, दिल्ली विश्वविद्यालय, जे. एन. यू., पाण्डुचेरी, हरिसिंह गौड़ केन्द्रीय विश्वविद्याल, सागर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली, जयपुर, तिरुपति आदि परिसरों से सम्बद्ध हैं।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में श्रीमती वीना जोशी, संयुक्त सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली एवं प्रो. मानेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं उद्बोधन से आयोजन को महत्त्व प्रदान किया।

### कार्यशाला में निम्नलिखित विद्वानों ने शिक्षण कार्य किया

| सं. | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| 1. | प्रो. के. के. थपलियाल | इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ |
| 2. | प्रो. गयाचरण त्रिपाठी | निदेशक, बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली |
| 3. | प्रो. वसन्त कुमार भट्ट | संस्कृत विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद |
| 4. | प्रो. ब्रज किशोर स्वाइं | संस्कृत विभाग, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी |
| 5. | प्रो. रत्नाबसु, | संस्कृत विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता |
| 6. | प्रो. जितेन्द्र बी. शाह | निदेशक, एल. डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद |
| 7. | प्रो. प्रकाश पाण्डेय | प्रधानाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर |

| | | |
|---|---|---|
| 8. | प्रो. दीप्ति रंजन पटनायक | अंग्रेजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी |
| 9. | प्रो. डिम्पल बहल | नेशनल फैशन डिजाइनिंग संस्थान, दिल्ली |
| 10. | प्रो. अशोक कुमार सिंह | बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली |
| 11. | डॉ. विजय शंकर शुक्ल | वरिष्ठ शोध अधिकारी, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली |
| 12. | डॉ. सोमनाथ सरकार | संस्कृत विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता |
| 13. | डॉ. एच. एन. शर्मा | शोध अधिकारी, एल. डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद |
| 14. | डॉ. मोहन पाण्डेय | बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली |

कार्यशाला में कुल 90 व्याख्यान हुए प्रातः नौ बजे से सायं छः बजे तक व्याख्यान होते थे। सायं भोजन के बाद 7.30 से रात्रि 9.30 बजे तक प्रतिभागी अध्यापकों की उपस्थिति में पाण्डुलिपि के माध्यम से लिपियों का अभ्यास करते थे एवं पुस्तकालय में बैठकर अध्ययन करते थे।

अध्यापन का आरम्भ लिपि एवं लेखन के इतिहास (भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में) पर व्याख्यान से हुआ। लिपियों में ब्राह्मी, शारदा, जैन देवनागरी, उड़िया एवं प्राचीन गौड़ी का ऐतिहासिक विकास क्रम के साथ ज्ञान कराया गया। इन लिपियों के स्वर, व्यंजन, मात्रा, एवं संयुक्ताक्षर के शिक्षण के साथ सम्बद्ध पाण्डुलिपि द्वारा इनका अभ्यास कराया गया। पाषाण एवं एवं स्तम्भ लेखों के वाचन का अभ्यास, पाण्डुलिपियों की प्राचीनता, आकार-प्रकार, निर्माण हेतु प्रयुक्त सामग्री तथा लेखन हेतु प्रयुक्त सामग्री पर व्याख्यान हुए।

भारत में अनुमानतः उपलब्ध 70 लाख पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। वे किस राज्य के किन नगरों, राजकीय अभिलेखागारों, विश्वविद्यालयों, अन्य शिक्षण संस्थानों के पुस्तकालयों, मन्दिरों एवं व्यक्तिगत भण्डारों में उपलब्ध हैं। राज्य एवं क्षेत्र विशेष के संग्रहालयों में किस सामग्री, लिपि एवं विषय विशेष की पाण्डुलिपियों की प्रमुखता है इस पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

साथ ही कुछ प्रमुख भण्डारों की स्थापना के इतिहास के रोचक प्रसंगों को उद्धृत किया गया। भारतीय पाण्डुलिपियों के विदेश ले जाने, आक्रामणों द्वारा इन्हें नष्ट करने एवं प्रकृति जन्य विनाश की घटनाओं का विवरण भी प्रस्तुत किया गया। पाण्डुलिपि संरक्षण एवं पाण्डुलिपि सूचीकरण के महनीय एवं प्रेरणादायी प्रसंगों का भी उल्लेख किया गया। उल्लेखनीय है कि बी. एल. आई. आई. में जो छब्बीस हजार महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ संगृहीत हैं उनको यहाँ लाने का भी रोचक इतिहास है। ये पाण्डुलिपियाँ देश विभाजन के समय उपद्रवगस्त पाकिस्तान के गुजराँवाला में आचार्य विजय वल्लभ सूरि द्वारा भूमि के अन्दर संरक्षित की गई थीं। स्वतंत्रता के बाद स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरु के समय इस भण्डार को देश में लाने का प्रयास शुरु हुआ और स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी के समय इसे भारत लाया जा सका। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि प्रतिकूल परिस्थितियाँ होते हुए भी आचार्यों ने अपने जान की परवाह न कर हमारी सांस्कृतिक धरोहर को बचाए रखा।

भारतीय पाण्डुलिपियों के प्रकाशित कैटलागों - देशी एवं विदेशी, उनमें प्रविष्ट पाण्डुलिपियों की संख्या, समाविष्ट सूचनाओं की प्रकृति पर भी व्याखान हुए।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य युवा-अध्येताओं में लिपि का ज्ञान तथा सम्पादन की ओर अभिरुचि जागृत करना था। इसो उद्देश्य हेतु पाण्डुलिपि सम्पादन के आवश्यक उपादानों के ज्ञान पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया। इस क्रम में पाठ-सम्पादन का इतिहास, पाण्डुलिपि-सम्पादन हेतु विषय-चयन, सम्बद्ध पाण्डुलिपियों की सूचना प्राप्त करना, पाण्डुलिपियों को उपलब्ध करना, वंश वृक्ष तैयार करना, लिप्यन्तरण, सन्तुलन पत्रिका तैयार करना, पाठ-संशोधन, पाठ-निर्धारण, पाठ-विचलन (भेद) के कारण, पाठ-दूषण के तत्त्व, काव्यशास्त्रीय दोषों के कारण उत्पन्न होने वाले पाठ-भेद, एकल सम्पादन की प्रक्रिया, टीका के आधार पर मूलपाठ का संशोधन, पाण्डुलिपि का काल-निर्धारण, पाण्डुलिपियों में पाप्त विभिन्न काल-विषयक प्रतीक चिह्न एवं चित्रित पाण्डुलिपियों का सम्पादन जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से अध्यापन कराया गया।

सम्पादन के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान कराने हेतु वेद, महाभारत, रामायण, रघुवंश, अभिज्ञानशाकुन्तल, उत्तररामचरित, जैन ग्रन्थ द्वादशारनयचक्र आदि के सम्पादन के दृष्टान्त प्रस्तुत किये गये।

पाठ-भेद में परम्परा एवं भाषा की प्रकृति भी एक कारक है। सम्पादन में परम्परागत प्रणाली के साथ आधुनिक तकनीक के उपयोग से होने वाली सुविधाओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया गया। नयी परिस्थिति में पाण्डुलिपियों के अत्यधिक संख्या में उपलब्ध होने की दशा में सम्पादक की समस्या की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया। आज महाभारत की पूरे भारत में नौ हजार पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। किसी-किसी जैन आगम की सैंकड़ों पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं।

देवनागरी लिपि के अभ्यास हेतु प्रतिभागियों ने काव्यप्रकाश एवं शब्दभेदप्रकाश की टीकाओं की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों का लिप्यन्तरण किया। सभी ने अपने लिए निर्धारित अंशों का लिप्यन्तरण पूरे मनोयोग से पूरा करने का प्रयास किया। यह सामग्री 110 फोलियों (220 पृष्ठ) क लगभग है। यह गृह कार्य लिपि के अभ्यास के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी साबित हुआ।

**उल्लेखनीय है कि कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागियों की विशेषता यह रही कि इनमें से अधिकांश ने शोध-विषय के रूप में पाण्डुलिपि आधारित विषय चुने हैं –**

1. शारदा लिपि की उत्पत्ति एवं विकास (उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान, जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश के सन्दर्भ में) – डिम्पल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
2. प्राचीन भारतीय अभिलेखों की उत्कीर्णन तकनीक एवं लेखन प्रविधि : एक ऐतिहासिक अध्ययन- दिवाकर मिश्र, काशी हिन्दू विवि., वाराणसी।
3. संस्कृत अभिलेख - संस्कृत भाषा एवं साहित्य का स्वरूप - स्नेहलता, दिल्ली विवि.
4. श्री रत्नकण्ठ प्रणीत काव्य प्रकाश टीकाया समीक्षात्मकं सम्पादनम् – पूजा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली।

5. वेदान्तसंज्ञाप्रकाश का सम्पादन एवं समालोचन – स्वस्ति शर्मा, दिल्ली विवि.
6. कविवरगजद्धर प्रणीत वासवदत्तीयाख्यायिकाटीकाया: समीक्षात्मकं सम्पादनम् – शिक्षा, आर.एस.एस., जयपुर
7. षट्कारक प्रक्रिया का आलोचनात्मक सम्पादन एवं समीक्षण – महात्मा वीणापाणि त्रिपाठी, दिविवि.
8. श्रीरंगदेवस्य सूर्यशतक व्याख्याया: सम्पादनम् – अभोप्सा मोहन्ता, पाण्ड्चेरी विवि.

हरिसिंह गौड केन्द्रीय विवि., सागर के दो प्राध्यापकों का इस कार्यशाला में सम्मिलित होने का उद्देश्य अपने विवि. के ग्रन्थागार में उपलब्ध छ: हजार हस्तप्रतों का रखरखाव, लिपि एवं सम्पादन का ज्ञान प्राप्त कर पाण्डुलिपि पर कार्य करना था।

## प्रतिभागियों की सूची

| सं. | नाम | स्थान | विशेष सूचना |
|---|---|---|---|
| 15. | आशुतोष कुमार | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 16. | अभोप्सा मोहान्ता | पाण्ड्चेरी विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 17. | दीप्तिपभा नायक | पाण्ड्चेरी विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 18. | डिम्पल | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति) |
| 19. | दिवाकर मिश्र | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 20. | डॉ. अर्चना रानी दबे | जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय | वरिष्ठ अध्येता, यू.जी.सी |
| 21. | डॉ. नौनिहाल गौतम | हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय | सहायक प्रोफेसर |
| 22. | डॉ. रामहेत गौतम | हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय | सहायक प्रोफेसर |
| 23. | डॉ. सुमन देवी | दिल्ली विश्वविद्यालय | वरिष्ठ अध्येता, यू.जी.सी |
| 24. | इतिश्री पण्डा | रा. सं. विद्यापीठ, तिरुपति | शोध छात्रा |
| 25. | म. वीणापाणि त्रि. | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 26. | मोहित कुमार मिश्र | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 27. | नरेश कीथिं | बैंगलोर, कर्नाटक | वरिष्ठ अध्येता, यू.जी.सी |
| 28. | निबेदिता बनर्जी | पाण्ड्चेरी विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 29. | नीलकण्ठ करुन | पाण्ड्चेरी विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 30. | पूजा | रा. सं. संस्थान, दिल्ली | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 31. | रिचा | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 32. | सत्यब्रत नन्दा | रा. सं. विद्यापीठ, तिरुपति | शोध छात्र (संस्थान छात्रवृत्ति) |
| 33. | सगुन सिन्हा | जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 34. | शिक्षा | रा. सं. संस्थान, जयपुर | शोध छात्रा (संस्थान छात्रवृत्ति) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 35. | श्याम सुन्दर शर्मा | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 36. | स्नेहलता | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 37. | सौम्यश्री बिस्वल | रा. सं. विद्यापीठ, तिरुपति | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |
| 38. | स्वस्ति शर्मा | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 39. | वेद कुमारी | दिल्ली विश्वविद्यालय | शोध छात्रा (जे.आर.एफ.) |
| 40. | यशवंत कुमार त्रिवेदी | जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय | शोध छात्र (जे.आर.एफ.) |

प्रतिभागियों के मूल्यांकन हेतु 30 सितम्बर को उनकी मौखिक परीक्षा ली गई। समापन समारोह दिनांक 01 अक्तूबर 2016 को सम्पन्न हुआ। इसमें राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के निदेशक प्रो. वी. वेंकटरमन रेड्डी मुख्य अतिथि एवं प्रो. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली थे। कार्यक्रम का आरम्भ सुश्री शिक्षा एवं पूजा द्वारा सरस्वती वन्दना एवं डॉ. मोहन पाण्डेय के णमोकार महामंत्र पाठ से हुआ।

संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया। विजय वल्लभ स्मारक के महासचिव श्री नरेन्द्र कुमार जैन ने स्मारक एवं संस्थान की गतिविधियों का परिचय दिया। कार्यशाला की संक्षिप्त कार्यवाही - विवरण प्रो. अशोक कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों की ओर से सुश्री सगुन सिन्हा एवं नरेश कीर्थि ने कार्यशाला के सम्बन्ध में अपना प्रतिभाव दिया। अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन ओसवाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समारोह में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में श्री जे. पी. जैन, कोषाध्यक्ष, बी.एल.आई.आई., डॉ. विजय शंकर शुक्ल, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली, जैन मृगावती विद्यालय के प्रबन्धक श्री दर्शन कुमार जैन, प्रधानाचार्या सुश्री अनुपमा भारद्वाज, डॉ. ऊषा शुक्ला, श्रीमती सुमन त्रिपाठी आदि उपस्थित थे।

***